Chapter बाईस

ग्रहों की कक्ष्याएँ

इस अध्याय में ग्रहों की कक्ष्याओं का वर्णन मिलता है। चन्द्रमा तथा अन्य ग्रहों की गतियों के अनुसार इस ब्रह्माण्ड के सभी जीव शुभ तथा अशुभ स्थितियों में प्रवृत्त होते हैं। इसे नक्षत्रों का प्रभाव कहा जाता है।

सूर्यदेव सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के कार्य व्यापारों को, विशेष रूप से ताप, प्रकाश, ऋतु-परिवर्तन आदि को नियंत्रित करते हैं और नारायण के विस्तार (अंश) माने जाते हैं। वे ऋग्, यजुर तथा साम—इन तीन वेदों का प्रतिनिधित्व करने वाले हैं, इसलिए त्रयीमय कहलाते हैं, जो भगवान् नारायण का ही रूप है। कभी-कभी सूर्यदेव को सूर्यनारायण भी कहा जाता हैं। सूर्यदेव ने स्वयं को बारह विभागों में विभाजित किया है और वे इस तरह छ: ऋतुओं के परिवर्तन का नियंत्रण करते हुए शीत, ग्रीष्म तथा वर्षा आदि का कारण बनते हैं। वर्णाश्रम धर्म का पालन करते हुए योगी तथा कर्मीजन अपने-अपने लाभ के लिए हठ या अष्टांग योग अथवा अग्निहोत्र यज्ञ द्वारा सूर्यनारायण की आराधना करते हैं। सूर्यदेव सदा श्रीभगवान् नारायण के सम्पर्क में रहते हैं। सूर्य ब्रह्माण्ड के भूलोक तथा भुवर्लोक के मध्य में स्थित अन्तरिक्ष में रहकर बारह राशियों के कालचक्र में घूमता हुआ राशि के अनुसार भिन्न-भिन्न नाम धारण करता है। चन्द्रमा के अनुसार मास दो पक्षों में विभाजित है। इसी प्रकार सौर गणनाओं के अनुसार सूर्य को एक राशि में जितना समय लगता है, वह मास है, दो मास मिलकर ऋतु बनाते हैं और बारह मासों का एक वर्ष होता है। आकाश का सम्पूर्ण क्षेत्रफल दो अर्धों में विभक्त हैं जिनमें से प्रत्येक अयन कहलाता है, जो सूर्य द्वारा छ: मास में तय किये जाने वाला मार्ग है। सूर्य कभी तीव्र गति से

चलता है, कभी मन्द गति से और कभी मध्यम गति से। इस प्रकार वह स्वर्ग, मर्त्य तथा अन्तरिक्ष—इन तीन लोकों की यात्रा करता है। विद्वान लोग इन कक्ष्याओं को संवत्सर, परिवत्सर, इडावत्सर, अनुवत्सर तथा वत्सर नामों से अभिहित करते हैं।

चन्द्रमा सूर्य की किरणों से १,००,००० योजन ऊपर स्थित है। स्वर्ग तथा पितृलोक में दिन तथा रात की गणना चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार की जाती है। चन्द्रमा से २,००,००० योजन की दूरी पर कुछ नक्षत्र स्थित हैं और इन नक्षत्रों के ऊपर शुक्रग्रह है जो ब्रह्माण्ड के समस्त वासियों के लिए कल्याणप्रद है। शुक्रग्रह से २,००,००० योजन ऊपर बुध ग्रह है जो कभी कल्याणप्रद होता है, तो कभी अशुभ। बुध ग्रह से २,००,००० योजन ऊपर अंगारक (मंगल) है, जिसका प्रभाव प्राय: प्रतिकूल होता है। अंगारक से भी २,००,००० योजन ऊपर बृहस्पति ग्रह है जो सुपात्र ब्राह्मणों के लिए सर्वदा अनुकूल होता है। बृहस्पति के ऊपर शनि नामक अत्यन्त अशुभ ग्रह है। इससे भी ऊपर विश्व का कल्याण मनाने वाले ऋषियों से युक्त सात नक्षत्रों का एक पुंज है। ये सातों नक्षत्र ध्रुवलोक की परिक्रमा करते हैं, जो इस ब्रह्माण्ड में भगवान् विष्णु का वास है।

राजोवाच

यदेतद्भगवत आदित्यस्य मेरुं ध्रुवं च प्रदक्षिणेन परिक्रामतो राशीनामभिमुखं प्रचलितं चाप्रदक्षिणं भगवतोपवर्णितममुष्य वयं कथमनुमिमीमहीति. ॥ १ ॥

शब्दार्थ

राजा उवाच—राजा (महाराज परीक्षित) ने पूछा; यत्—जो; एतत्—इस; भगवत:—सर्वशक्तिमान; आदित्यस्य—सूर्य (सूर्यनारायण) का; मेरुम्—सुमेरु पर्वत; ध्रुवम् च—तथा ध्रुवलोक; प्रदक्षिणेन—दाहिने रखकर; परिक्रामत:—परिक्रमा करते हुए; राशीनाम्—राशियों की; अभिमुखम्—ओर मुख करके; प्रचलितम्—गति करते हुए; च—तथा; अप्रदक्षिणम्—बाँये रख कर; भगवता—आपके द्वारा; उपवर्णितम्—वर्णित; अमुष्य—उसका; वयम्—हम (श्रोता); कथम्—किस प्रकार; अनुमिमीमहि—तर्क तथा निर्णय द्वारा स्वीकार करें; इति—इस प्रकार।

राजा परीक्षित ने श्रीशुकदेव गोस्वामी से पूछा—हे भगवान्, आपने पहले ही इस सत्य की पुष्टि की है कि परम शक्तिमान सूर्यदेव ध्रुवलोक तथा सुमेरु पर्वत को अपने दाएँ रखकर ध्रुवलोक की परिक्रमा करते हैं, तो भी वे राशियों की ओर मुख किये रहते हैं और सुमेरु तथा ध्रुवलोक को अपने बाएँ भी रखते हैं, अत: हम तर्क तथा निर्णय द्वारा किस प्रकार स्वीकार करें कि हर समय सूर्यदेव सुमेरु तथा ध्रुवलोक को दाएँ तथा बाएँ दोनों ओर रखते हुए चलते हैं?

स होवाच
यथा कुलालचक्रेण भ्रमता सह भ्रमतां तदाश्रयाणां पिपीलिकादीनां गतिरन्यैव प्रदेशान्तरेष्वप्युपलभ्यमानत्वादेवं नक्षत्रराशिभिरुपलक्षितेन कालचक्रेण ध्रुवं मेरुं च प्रदक्षिणेन परिधावता सह परिधावमानानां तदाश्रयाणां सूर्यादीनां ग्रहाणां गतिरन्यैव नक्षत्रान्तरे राश्यन्तरे चोपलभ्यमानत्वात्. ॥ २ ॥

शब्दार्थ

सः—शुकदेव गोस्वामी ने; ह—अत्यन्त स्पष्ट; उवाच—उत्तर दिया; यथा—जिस प्रकार; कुलाल-चक्रेण—कुम्हार के चाक के; भ्रमता—घूमते हुए; सह—साथ; भ्रमताम्—जो चारों ओर घूमते हुए, घूमने वाले; तत्-आश्रयाणाम्—उस (चक्र) में स्थित होकर; पिपीलिक-आदीनाम्—छोटी-छोटी चींटियों की; गतिः—गति; अन्या—दूसरी; एव—ही; प्रदेश-अन्तरेषु—विभिन्न स्थानों में; अपि—भी; उपलभ्यमानत्वात्—अनुभवगम्य होने के कारण; एवम्—इसी प्रकार; नक्षत्र-राशिभिः—नक्षत्रों तथा राशियों द्वारा; उपलक्षितेन—देखा जाकर; काल-चक्रेण—कालचक्र के साथ; ध्रुवम्—ध्रुवलोक नामक नक्षत्र; मेरुम्—सुमेरु पर्वत को; च—तथा; प्रदक्षिणेन—दाईं ओर; परिधावता—चारों ओर घूमते हुए; सह—साथ; परिधावमानानाम्—परिक्रमा करने वालों का; तत्-आश्रयाणाम्—जिनका आश्रय कालचक्र हैं; सूर्य-आदीनाम्—सूर्य आदि; ग्रहाणाम्—ग्रहों की; गतिः—गति; अन्या—अन्य; एव—निश्चय ही; नक्षत्र-अन्तरे—विभिन्न नक्षत्रों में; राशि-अन्तरे—विभिन्न राशियों में; च—तथा; उपलभ्यमानत्वात्—देखे जाने के कारण।.

श्रीशुकदेव ने उत्तर दिया—जब कुम्हार के घूमते हुए चाक पर छोटी छोटी चींटियाँ बैठी रहती हैं, तो वे उसके साथ-साथ घूमती हैं, किन्तु उनकी गति चाक की गति से भिन्न होती हैं, क्योंकि कभी वे चाक के एक भाग में दिखती हैं, तो कभी दूसरे भाग पर। इसी प्रकार राशियाँ तथा नक्षत्र सुमेरु तथा ध्रुवलोक को अपने दाईं ओर रखकर कालचक्र के साथ घूमते हैं और सूर्य तथा अन्य ग्रह चींटी के तुल्य उनके साथ-साथ घूमते हैं। तो भी वे विभिन्न कालों में विभिन्न राशियों तथा नक्षत्रों में देखे जाते हैं। इससे सूचित होता है कि उनकी गति राशियों तथा कालचक्र से सर्वथा भिन्न है।

स एष भगवानादिपुरुष एव साक्षान्नारायणो लोकानां स्वस्तय आत्मानं त्रयीमयं कर्मविशुद्धिनिमित्तं कविभिरपि च वेदेन विजिज्ञास्यमानो द्वादशधा विभज्य षट्सु वसन्तादिष्वृतुषु यथोपजोषमृतुगुणान्विदधाति. ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

सः—वह; एषः—यह; भगवान्—परम शक्तिमान; आदि-पुरुषः—आदि पुरुष; एव—ही; साक्षात्—प्रत्यक्षतः; नारायणः—श्रीभगवान् नारायण; लोकानाम्—अन्य लोकों के; स्वस्तये—लाभ हेतु; आत्मानम्—स्वयं; त्रयी-मयम्—तीन वेदों (साम, यजुर् तथा ऋग्) से युक्त; कर्म-विशुद्धि—कर्मों की शुद्धि; निमित्तम्—कारणरूप; कविभिः—महान् सन्तों द्वारा; अपि—भी; च—तथा; वेदेन—वैदिक ज्ञान से; विजिज्ञास्यमानः—पूछे जाने पर; द्वादश-धा—बारह विभागों में; विभज्य—विभाजित होकर; षट्सु—छः में; वसन्त-आदिषु—वसन्त आदि; ऋतुषु—ऋतुओं में; यथा-उपजोषम्—अपने पूर्व कर्मों के भोग के अनुसार; ऋतु-गुणान्—विभिन्न ऋतुओं के गुण; विदधाति—विधान करता है।.

विराट जगत के आदि कारण भगवान् नारायण हैं। जब वैदिक ज्ञान से भली भाँति परिचित महान् साधुजनों ने परम पुरुष की स्तुति की तो वे समस्त लोकों का हित करने तथा कर्मों की

शुद्धि के लिए सूर्य के रूप में इस भौतिक जगत में अवतरित हुए। उन्होंने स्वयं को बारह भागों में विभाजित करके वसन्तादि ऋतुओं की सृष्टि की। इस प्रकार उन्होंने ताप, शीत इत्यादि ऋतु सम्बन्धी गुणों की सृष्टि की।

तमेतमिह पुरुषास्त्रय्या विद्यया वर्णाश्रमाचारानुपथा उच्चावचैः कर्मभिराम्नातैर्योगवितानैश्च श्रद्धया यजन्तोऽञ्जसा श्रेयः समधिगच्छन्ति. ॥ ४॥

शब्दार्थ

तम्—उस (श्रीभगवान्) को; एतम्—यह; इह—इस मर्त्यलोक में; पुरुषाः—सभी मनुष्य; त्रय्या—तीन विभागों वाले; विद्यया—वैदिक ज्ञान से; वर्ण-आश्रम-आचार—वर्णाश्रम धर्म; अनुपथाः—अनुसरण करते हुए; उच्च-अवचैः—वर्णाश्रम धर्म (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र) में पद के अनुसार उच्च या निम्न; कर्मभिः—अपने कर्मों द्वारा; आम्नातैः—प्रदत्त; योग-वितानैः—ध्यान तथा अन्य योग-क्रियाओं से; च—तथा; श्रद्धया—अत्यन्त श्रद्धा सहित; यजन्तः—आराधना करते हुए; अञ्जसा—बिना कठिनाई के; श्रेयः—जीवन का परम लाभ; समधिगच्छन्ति—प्राप्त करते हैं।

चारों वर्णों तथा चारों आश्रमों के लोग सामान्य रूप से सूर्यदेव के रूप में पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् नारायण की उपासना करते हैं। वे अत्यन्त श्रद्धा के साथ वेदत्रयी द्वारा प्रतिपादित अग्निहोत्र जैसे छोटे-बड़े सकाम कर्मों के अनुसार तथा योग क्रिया द्वारा परमात्मास्वरूप श्रीभगवान् की आराधना करते हैं। इस प्रकार वे सुगमतापूर्वक जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त करते हैं।

अथ स एष आत्मा लोकानां द्यावापृथिव्योरन्तरेण नभोवलयस्य कालचक्रगतो द्वादश मासान्भुङ्क्ते राशिसंज्ञान्संवत्सरावयवान्मासः पक्षद्वयं दिवा नक्तं चेति सपादर्क्षद्वयमुपदिशन्ति यावता षष्ठमंशं भुञ्जीत स वै ऋतुरित्युपदिश्यते संवत्सरावयवः. ॥ ५॥

शब्दार्थ

अथ—अतः; सः—वह; एषः—यह; आत्मा—प्राणशक्ति; लोकानाम्—तीनों लोकों का; द्यावृ-आ-पृथिव्योः अन्तरेण—ब्रह्माण्ड के ऊपरी तथा निचले भागों के मध्य; नभः-वलयस्य—अन्तरिक्ष का; काल-चक्र-गतः—काल के चक्र में आसीन; द्वादश मासान्—बारह महीने; भुङ्क्ते —तय करता है; राशि-संज्ञान्—राशियों के नाम पर; संवत्सर-अवयवान्—पूरे वर्ष के अंग; मासः—एक मास; पक्ष-द्वयम्—दो पखवाड़े; दिवा—दिन; नक्तम् च—तथा रात्रि; इति—इस प्रकार; सपाद-ऋक्ष-द्वयम्—ज्योतिष गणना के अनुसार दो तथा चौथाई (सवा दो) नक्षत्र; उपदिशन्ति—उपदेश देते हैं; यावता—जितने समय से; षष्ठम् अंशम्—अपनी कक्ष्या का छठवाँ भाग; भुञ्जीत—तय करता है; सः—वह भाग; वै—निस्संदेह; ऋतुः—ऋतु; इति—इस प्रकार; उपदिश्यते—उपदेशित होता है; संवत्सर-अवयवः—वर्ष का भाग।

सूर्यदेव जो नारायण अथवा विष्णु हैं और समस्त लोकों के आत्मा हैं, वे इस ब्रह्माण्ड के ऊपरी तथा निचले भागों (पृथ्वी तथा द्युलोक) के मध्य अन्तरिक्ष में स्थित हैं। कालचक्र में स्थित होकर बारह मासों को तय करते हुए सूर्य बारह राशियों के सम्पर्क में आकर उनके

अनुसार बारह भिन्न-भिन्न नाम धारण करते हैं। इन बारह मासों का योगफल संवत्सर अथवा एक पूर्ण वर्ष कहलाता है। चन्द्र गणना के अनुसार चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के दो पक्ष मिल कर एक मास बनाते हैं। पितृलोक ग्रह पर यही काल एक दिन तथा रात के तुल्य है। ज्योतिष गणना के अनुसार एक मास सवा दो नक्षत्रों के बराबर होता है। जब सूर्य दो मास यात्रा कर लेता है, तो एक ऋतु बीतती है; इसलिए ऋतु के अनुसार होने वाले परिवर्तनों को वर्ष-देह का अंग माना जाता है।

अथ च यावतार्धेन नभोवीथ्यां प्रचरति तं कालमयनमाचक्षते. ॥ ६ ॥

शब्दार्थ

अथ—अब; च—भी; यावता—जितने समय से; अर्धेन—आधा; नभः-वीथ्याम्—अन्तरिक्ष में; प्रचरति—सूर्य चलता है; तम्—उस; कालम्—समय को; अयनम्—अयन; आचक्षते—कहते हैं।

इस प्रकार आधे अन्तरिक्ष को पार करने में सूर्य को जितना समय लगता है, वह अयन कहलाता है [उत्तर या दक्षिण दिशा में]।

अथ च यावन्नभोमण्डलं सह द्यावापृथिव्योर्मण्डलाभ्यां कात्स्न्र्येन स ह भुञ्जीत तं कालं संवत्सरं परिवत्सरमिडावत्सरमनुवत्सरं वत्सरमिति भानोर्मान्द्यशैश्यसमगतिभिः समामनन्ति. ॥ ७ ॥

शब्दार्थ

अथ—अब; च—भी; यावत्—जब तक; नभः-मण्डलम्—उच्च तथा निम्न लोक के मध्य का अन्तरिक्ष; सह—के साथ; द्यौ—ऊपरी जगत का; आपृथिव्योः—निम्न जगत का; मण्डलाभ्याम्—गोलक; कात्स्न्र्येन—पूर्णतः; सः—वह; ह—निस्संदेह; भुञ्जीत—तय करता है; तम्—उस; कालम्—काल, समय को; संवत्सरम्—संवत्सर; परिवत्सरम्—परिवत्सर; इडावत्सरम्—इडावत्सर; अनुवत्सरम्—अनुवत्सर; वत्सरम्—वत्सर; इति—इस प्रकार; भानोः—सूर्य की; मान्द्य—धीमी, मन्द; शैश्य—तीव्र; सम—समान; गतिभिः—गतियों के द्वारा; समामनन्ति—अनुभवी विद्वान वर्णन करते हैं।

सूर्यदेव की तीन प्रकार की गतियाँ हैं—मन्द, तीव्र और मध्यम। इन तीनों गतियों से स्वर्ग, पृथ्वी तथा अन्तरिक्ष प्रक्षेत्रों के चारों ओर पूरी यात्रा करने में जितना समय लगता है उसे विद्वद्जन संवत्सर, परिवत्सर, इडावत्सर, अनुवत्सर तथा वत्सर—इन पाँच नामों से वर्णन करते हैं। सौर पद्धति ज्योतिष गणनाओं के अनुसार प्रत्येक वर्ष कलैण्डर वर्ष से छः दिन आगे तक जाता है और चन्द्र पक्षीय वर्षों में बारह दिन का अन्तर होता है, जैसे-जैसे सम्वत्सर, परिवत्सर, इडावत्सर, अनुवत्सर और वत्सर बीतते हैं, प्रत्येक पाँच वर्षों में दो अतिरिक्त मास जुड़ जाते हैं। इससे छठा सम्वत्सर बन जाता है, किन्तु अतिरिक्त सम्वत्सर होने के कारण सौर-पद्धति में

सम्वत्सरों की उपयुक्त पाँच नामों के अनुसार गणना की जाती है।

एवं चन्द्रमा अर्कगभस्तिभ्य उपरिष्टाल्लक्षयोजनत उपलभ्यमानोऽर्कस्य संवत्सरभुक्तिं पक्षाभ्यां मासभुक्तिं सपादर्क्षाभ्यां दिनेनैव पक्षभुक्तिमग्रचारी द्रुततरगमनो भुङ्क्ते. ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

एवम्—इस प्रकार; चन्द्रमा—चाँद; अर्क-गभस्तिभ्यः—सूर्य प्रकाश की किरणों से; उपरिष्टात्—ऊपर; लक्ष-योजनतः—१,००,००० योजन से; उपलभ्यमानः—स्थित रह कर; अर्कस्य—सूर्य का; संवत्सर-भुक्तिम्—भोग का व्यतीत हुआ एक वर्ष; पक्षाभ्याम्—दो पक्षों के द्वारा; मास-भुक्तिम्—व्यतीत एक मास; सपाद-ऋक्षाभ्याम्—सवा दो दिन से; दिनेन—एक दिन से; एव—केवल; पक्ष-भुक्तिम्—पक्ष की अवधि; अग्रचारी—आगे चलने वाला; द्रुत-तर-गमनः—अधिक तेजी से चलते हुए; भुङ्क्ते—तय करता है।

सूर्य-प्रकाश की किरणों से १,००,००० योजन (८,००,००० मील) ऊपर चन्द्रमा है जो सूर्य से अधिक तीव्र गति से यात्रा करता है। वह दो चन्द्र पक्षों में एक सौर संवत्सर के समान दूरी तय कर लेता है। अर्थात् सवा दो दिन में सूर्य के एक मास के तुल्य और एक दिन में सूर्य के एक पक्ष के बराबर दूरी तय कर लेता है।

तात्पर्य : जब हम इस तथ्य पर विचार करते हैं कि चन्द्रमा सूर्य की किरणों से १,००,००० योजन या ८,००,००० मील दूरी पर स्थित है, तो यह अत्यन्त विस्मयजनक लगता है कि चन्द्रमा तक आधुनिक यात्राएँ सम्भव हो सकीं। चूँकि चाँद इतनी दूर है इस कारण चन्द्रमा तक अन्तरिक्ष-यान कैसे पहुँच सके। यह संदेहास्पद रहस्य है। आधुनिक वैज्ञानिक गणनाएँ एक के बाद एक बदलती रहती हैं, अतः वे अनिश्चित हैं। हमें वैदिक साहित्य की गणनाओं को ही स्वीकार करना होगा। ये गणनाएँ स्थायी हैं। प्राचीन ज्योतिष-गणनाएँ वैदिक साहित्य में अंकित हैं और ये आज भी सही हैं। वैदिक अथवा आधुनिक गणनाओं में कौनसी अच्छी हैं, यह औरों के लिए रहस्यपूर्ण क्यों न हों, किन्तु हमारे विचार से वैदिक गणनाएँ ही सही हैं।

अथ चापूर्यमाणाभिश्च कलाभिरमराणां क्षीयमाणाभिश्च कलाभिः पितृणामहोरात्राणि पूर्वपक्षापरपक्षाभ्यां वितन्वानः सर्वजीवनिवहप्राणो जीवश्चैकमेकं नक्षत्रं त्रिंशता मुहूर्तैर्भुङ्क्ते. ॥ ९ ॥

शब्दार्थ

अथ—इस प्रकार; च—भी; आपूर्यमाणाभिः—क्रमशः बढ़ते हुए; च—तथा; कलाभिः—चन्द्रमा की कलाओं; अमराणाम्—देवताओं का; क्षीयमाणाभिः—क्रमशः घटते रहने से; च—तथा; कलाभिः—चन्द्र कलाओं से; पितृणाम्—पितृलोक-वासियों का; अहः-रात्राणि—दिन तथा रात; पूर्व-पक्ष-अपर-पक्षाभ्याम्—कृष्ण तथा शुक्ल पक्ष से; वितन्वानः—वितरित करते हुए; सर्व-जीव-निवह—समस्त जीवात्माओं का; प्राणः—जीवन, प्राण; जीवः—जीव; च—भी; एकम् एकम्—एक के बाद एक; नक्षत्रम्—तारा-समूह; त्रिंशता—तीस; मुहूर्तैः—मुहूर्तों से; भुङ्क्ते—तय करता है।

जब चन्द्रमा बढ़ता है (शुक्ल पक्ष में) तो इसका प्रकाशमय अंश प्रतिदिन बढ़ता जाता है, जिससे देवताओं के लिए दिन और पितरों के लिए रात्रि उत्पन्न होती है। किन्तु जब चन्द्रमा घटता रहता है (कृष्ण पक्ष में) तो देवताओं के लिए रात्रि और पितरों के लिए दिन उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार तीस मुहूर्तों में (पूरे एक दिन में) चन्द्रमा प्रत्येक नक्षत्र से होकर गुजरता है। चन्द्रमा अमृतमयी शीतलता प्रदान करके अन्नों की वृद्धि को प्रभावित करता है, इसलिए चन्द्रदेव को समस्त जीवात्माओं का प्राण माना जाता है। फलस्वरूप उसे इस ब्रह्माण्ड में वास करने वाला मुख्य प्राणी, जीव, कहा गया है।

य एष षोडशकलः पुरुषो भगवान्मनोमयोऽन्नमयोऽमृतमयो देवपितृमनुष्यभूतपशुपक्षिसरीसृपवीरुधां प्राणाप्यायनशीलत्वात्सर्वमय इति वर्णयन्ति. ॥ १० ॥

शब्दार्थ

यः—जो; एषः—यह; षोडश-कलः—सोलह कलाओं वाला (पूर्ण चन्द्रमा); पुरुषः—पुरुष; भगवान्—श्रीभगवान् से प्राप्त महान् शक्ति वाला; मनः-मयः—मन का प्रधान श्रीविग्रह; अन्न-मयः—अन्नों का शक्ति स्रोत; अमृत-मयः—अमृतमय; देव—समस्त देवताओं का; पितृ—समस्त पितृलोकवासियों का; मनुष्य—समस्त मानवगण; भूत—समस्त जीवात्माएँ; पशु—समस्त जानवर; पक्षि—पक्षियों का; सरीसृप—रेंगने वाले जन्तुओं का; वीरुधाम्—समस्त लताओं तथा वृक्षों का; प्राण—प्राणवायु; अपि—निश्चय ही; आयन-शीलत्वात्—पोषण करने से; सर्व-मयः—सर्वव्यापी; इति—इस प्रकार; वर्णयन्ति—विद्वान लोग वर्णन करते हैं।.

समस्त शक्तियों से पूर्ण होने के कारण चन्द्रमा श्रीभगवान् के प्रभाव का सूचक है। प्रत्येक व्यक्ति के मन का प्रमुख श्रीविग्रह होने के कारण चन्द्रमा मनोमय कहलाता है। वह अन्नमय भी कहलाता है क्योंकि वह समस्त वनस्पतियों तथा पौधों को शक्ति प्रदान करता है। समस्त जीवात्माओं का प्राणाधार होने से वह अमृतमय भी कहा जाता है। चन्द्रमा समस्त देवताओं, पितरों, मनुष्यों, पशुओं, पक्षियों, सरीसृपों, वृक्षों, पौधों तथा अन्य सभी जीवात्माओं को प्रसन्न करने वाला हैं। सभी प्राणी चन्द्रमा की उपस्थिति से संतुष्ट रहते हैं; फलतः वह ''सर्वमय'' भी कहलाता है।

तत उपरिष्टाद्द्वलक्षयोजनतो नक्षत्राणि मेरुं दक्षिणेनैव कालायन ईश्वरयोजितानि सहाभिजिताष्टाविंशतिः. ॥ ११ ॥

शब्दार्थ

ततः—चन्द्रमा के उस भाग से; उपरिष्टात्—ऊपर; द्वि-लक्ष-योजनतः—२,००,००० योजन; नक्षत्राणि—अनेक नक्षत्र; मेरुम्—सुमेरु पर्वत; दक्षिणेन एव—दाईं दिशा में; काल-अयने—कालचक्र में; ईश्वर-योजितानि—श्रीभगवान् द्वारा जोड़ा गया; सह—साथ; अभिजिता—अभिजित् नामक नक्षत्र; अष्टा-विंशतिः—अट्ठाइस।

चन्द्रमा से २,००,००० योजन (१६,००,०००) ऊपर कई नक्षत्र स्थित हैं। श्रीभगवान् ने उन्हें कालचक्र में संयुक्त कर रखा है, अतः ये सुमेरु पर्वत को दाईं ओर रखते हुए घूमते रहते हैं और इनकी गति सूर्य की गति से सर्वथा भिन्न होती है। अभिजित् सहित कुल अट्ठाइस नक्षत्र हैं।

तात्पर्य : यहाँ जिन नक्षत्रों का उल्लेख हुआ है वे सूर्य से १६,००,००० मील (२,००,००० योजन) ऊपर हैं। इस प्रकार वे पृथ्वी से ४०,००,००० मील ऊपर हुए।

तत उपरिष्टादुशना द्विलक्षयोजनत उपलभ्यते पुरतः पश्चात्सहैव वार्कस्य
शैश्यमान्द्यसाम्याभिर्गतिभिरर्कवच्चरति लोकानां नित्यदानुकूल एव प्रायेण वर्षयंश्चारेणानुमीयते स
वृष्टिविष्टम्भग्रहोपशमनः. ॥ १२॥

शब्दार्थ

ततः—इन नक्षत्र पुञ्जों से; उपरिष्टात्—ऊपर; उशना—शुक्र; द्वि-लक्ष-योजनतः—२,००,००० योजन; उपलभ्यते—अनुभव किया जाता है; पुरतः—सामने; पश्चात्—पीछे; सह—साथ-साथ; एव—निस्सन्देह; वा—तथा; अर्कस्य—सूर्य का; शैश्य—तीव्र; मान्द्य—मन्द; साम्याभिः—समान; गतिभिः—गतियों से; अर्कवत्—सूर्य के ही समान; चरति—घूमता है; लोकानाम्—इस ब्रह्माण्ड के समस्त लोकों का; नित्यदा—अनवरत; अनुकूलः—अनुकूल; एव—निस्सन्देह; प्रायेण—प्रायः; वर्षयन्—वर्षा करके; चारेण—बादल उठाकर; अनुमीयते—देखा जाता है; सः—वह (शुक्र); वृष्टि-विष्टम्भ—वर्षा के लिए बाधास्वरूप; ग्रह-उपशमनः—उपशमनकारी ग्रह।

इन नक्षत्रों से लगभग २,००,००० योजन (१६,००,००० मील) ऊपर शुक्र ग्रह है जो लगभग सूर्य की ही गति अर्थात् तीव्र, मन्द तथा मध्यम गतियों से घूमता है। वह कभी सूर्य के पीछे, कभी सामने और कभी उसी के साथ-साथ रहता है। वह वर्षा में विघ्न डालने वाले ग्रहों को शान्त करने वाला है, अतः इसकी उपस्थिति में वर्षा होती है और इसलिए यह इस ब्रह्माण्ड के समस्त जीवों के अनुकूल माना जाता है। इसे विद्वानों ने स्वीकार किया है।

उशनसा बुधो व्याख्यातस्तत उपरिष्टादि्द्वलक्षयोजनतो बुधः सोमसुत उपलभ्यमानः प्रायेण
शुभकृद्यदार्काद्व्यतिरिच्येत तदातिवाताभ्रप्रायानावृष्ट्यादिभयमाशंसते. ॥ १३॥

शब्दार्थ

उशनसा—शुक्र से; बुधः—बुध; व्याख्यातः—जिसकी व्याख्या हो गई हो; ततः—उस (शुक्र) से; उपरिष्टात्—ऊपर; द्वि-लक्ष-योजनतः—२,००,००० योजन अर्थात् १६,००,००० मील; बुधः—बुध ग्रह; सोम-सुतः—चन्द्रमा का पुत्र; उपलभ्यमानः—अवस्थित है; प्रायेण—प्रायः; शुभ-कृत्—ब्रह्माण्ड के वासियों के लिए शुभ; यदा—जब; अर्कात्—सूर्य से; व्यतिरिच्येत—पृथक् किया जाता है; तदा—उस समय; अतिवात—चक्रवात तथा अन्य विघ्न; अभ्र—बादल; प्राय—प्रायः; अनावृष्टि-आदि—अनावृष्टि इत्यादि; भयम्—भय; आशंसते—बढ़ाता है।

बुध को शुक्र के ही समान बताया है, क्योंकि यह कभी सूर्य के पीछे, कभी सामने और कभी-कभी इसके साथ-साथ घूमता है। यह शुक्र से १६,००,००० मील अथवा पृथ्वी से ७२,००,००० मील ऊपर स्थित है। यह चन्द्रमा का पुत्र होने से विश्व के वासियों का मंगल करने वाला है, किन्तु जब यह सूर्य के साथ नहीं घूमता होता तो यह चक्रवात, अंधड़, अनियमित वर्षा तथा जलरहित बादलों की जानकारी देता है। इस प्रकार अवर्षा या अतिवर्षा के कारण यह भयावह परिस्थिति उत्पन्न करता है।

अत ऊर्ध्वमङ्गारकोऽपि योजनलक्षद्वितय उपलभ्यमानस्त्रिभिस्त्रिभिः पक्षैरेकैकशो राशीन्द्वादशानुभुङ्क्ते यदि न वक्रेणाभिवर्तते प्रायेणाशुभग्रहोऽघशंसः. ॥ १४॥

शब्दार्थ

अतः—इससे; ऊर्ध्वम्—ऊपर; अङ्गारकः—मंगल; अपि—भी; योजन-लक्ष-द्वितये—२,००,००० योजन अर्थात् १६,००,००० मील की दूरी पर; उपलभ्यमानः—स्थित है; त्रिभिः त्रिभिः—तीन-तीन करके; पक्षैः—पक्ष; एक-एकशः—एक के पश्चात् एक; राशीन्—राशियाँ; द्वादश—बारह; अनुभुङ्क्ते —से पार करता है; यदि—यदि; न—नहीं; वक्रेण—वक्र सहित; अभिवर्तते—निकट पहुँचता है; प्रायेण—प्रायः; अशुभ-ग्रहः—प्रतिकूल, अमंगलकारी ग्रह; अघ-शंसः—कष्ट उत्पन्न करने वाला।.

बुध से १६,००,००० मील ऊपर अथवा पृथ्वी से ८८,००,००० मील ऊपर मंगल ग्रह है। यदि यह वक्रगति से न चले तो एक-एक राशि को तीन-तीन पक्षों में पार करता हुआ क्रमशः बारहों राशियों में से यात्रा करता है। यह प्रायः सदैव वर्षा तथा अन्य प्रभावों के रूप में प्रतिकूल अवस्थाएँ उत्पन्न करता है।

तत उपरिष्टाद्द्वलक्षयोजनान्तरगता भगवान्बृहस्पतिरेकैकस्मिन्नाशौ परिवत्सरं परिवत्सरं चरति यदि न वक्रः स्यात्प्रायेणानुकूलो ब्राह्मणकुलस्य. ॥ १५॥

शब्दार्थ

ततः—वह (मंगल); उपरिष्टात्—ऊपर; द्वि-लक्ष-योजन-अन्तर-गताः—२,००,००० योजन अर्थात् १६,००,००० मील की दूरी पर स्थित; भगवान्—सर्वाधिक शक्तिमान ग्रह; बृहस्पतिः—बृहस्पति; एक-एकस्मिन्—एक के पश्चात् एक; राशौ—राशि में; परिवत्सरम् परिवत्सरम्—प्रति परिवत्सर तक; चरति—चलता है; यदि—यदि; न—नहीं; वक्रः—वक्र; स्यात्—हो जाता है; प्रायेण—प्रायः; अनुकूलः—शुभ; ब्राह्मण-कुलस्य—इस ब्रह्माण्ड के ब्राह्मणों के लिए।.

मंगल से १,६००,००० योजन अथवा पृथ्वी से १०,४००,००० मील ऊपर बृहस्पति नामक ग्रह स्थित है जो एक परिवत्सर में एक राशि की यात्रा करता है। यदि यह वक्रगति से न चले तो यह ब्राह्मणों के लिए अत्यन्त अनुकूल रहता है।

तत उपरिष्टाद्योजनलक्षद्वयात्प्रतीयमानः शनैश्चर एकैकस्मिन्नाशौ त्रिंशन्मासान्विलम्बमानः सर्वानेवानुपर्येति तावद्भिरनुवत्सरैः प्रायेण हि सर्वेषामशान्तिकरः. ॥ १६ ॥

शब्दार्थ

ततः—वह (बृहस्पति); उपरिष्टात्—ऊपर; योजन-लक्ष-द्वयात्—२,००,००० योजन (१६,००,००० मील) की दूरी से; प्रतीयमानः—अवस्थित है; शनैश्चरः—शनिश्चर ग्रह; एक-एकस्मिन्—एक के पश्चात् एक; राशौ—राशि में; त्रिंशत् मासान्—तीस मास तक; विलम्-बमानः—विलम्ब करते हुए, रुकते हुए; सर्वान्—सभी बारह राशियाँ; एव—ही; अनुपर्येति—को पार करता है; तावद्भिः—उतने; अनुवत्सरैः—अनुवत्सरों से; प्रायेण—प्रायः; हि—निस्सन्देह; सर्वेषाम्—समस्त वासियों के लिए; अशान्तिकरः—अत्यधिक कष्टकारक।

बृहस्पति से २,००,००० योजन अर्थात् १६,००,००० मील और पृथ्वी से १,२०,००,००० मील ऊपर शनिग्रह स्थित है जो तीस-तीस मास में प्रत्येक राशि से होकर जाता है और तीस अनुवत्सरों में सम्पूर्ण राशिवृत्त पूरा करता है। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए अत्यन्त अशुभ है।

तत उत्तरस्मादृषय एकादशलक्षयोजनान्तर उपलभ्यन्ते य एव लोकानां शमनुभावयन्तो भगवतो विष्णोर्यत्परमं पदं प्रदक्षिणं प्रक्रमन्ति. ॥ १७॥

शब्दार्थ

ततः—शनि ग्रह; उत्तरस्मात्—ऊपर; ऋषयः—ऋषिगण; एकादश-लक्ष-योजन-अन्तरे—११,००,००० योजन की दूरी पर; उपलभ्यन्ते—अवस्थित है; ये—सभी; एव—ही; लोकानाम्—ब्रह्माण्ड के समस्त निवासियों के लिए; शम्—शुभ; अनुभावयन्तः—सदैव सोचते हैं; भगवतः—श्रीभगवान्; विष्णोः—भगवान् विष्णु का; यत्—जो; परमम् पदम्—परम धाम; प्रदक्षिणम्—दायें रख कर; प्रक्रमन्ति—परिक्रमा करते हैं।

शनिग्रह से ११,००,००० योजन अर्थात् ८८,००,००० मील (अथवा पृथ्वी से २,०८,००,००० मील) ऊपर सप्तर्षि अवस्थित हैं, जो सदैव ब्रह्माण्ड के समस्त प्राणियों की मंगल-कामना करते रहते हैं। वे भगवान् विष्णु के परम धाम ध्रुवलोक की प्रदक्षिणा करते हैं।

तात्पर्य : श्रील मध्वाचार्य ने *ब्रह्माण्ड पुराण* से निम्नलिखित श्लोक उद्धृत किया है—

ज्ञानानन्दात्मनो विष्णुः शिशुमारवपुष्यथ।

ऊर्ध्वलोकेषु स व्याप्त आदित्याद्यास्तदाश्रिता॥

ज्ञान तथा दिव्य आनन्द के स्रोत भगवान् विष्णु ने ब्रह्माण्ड के सर्वोच्च तल पर स्थित सातवें स्वर्ग में शिशुमार का रूप धारण किया। सूर्य आदि अन्य सभी ग्रह इस शिशुमार लोक के अधीन अवस्थित हैं।

इस प्रकार श्रीमद्भागवत के पंचम स्कन्ध के अन्तर्गत ''ग्रहों की कक्ष्याएँ'' नामक बाईसवें अध्याय के भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुए।